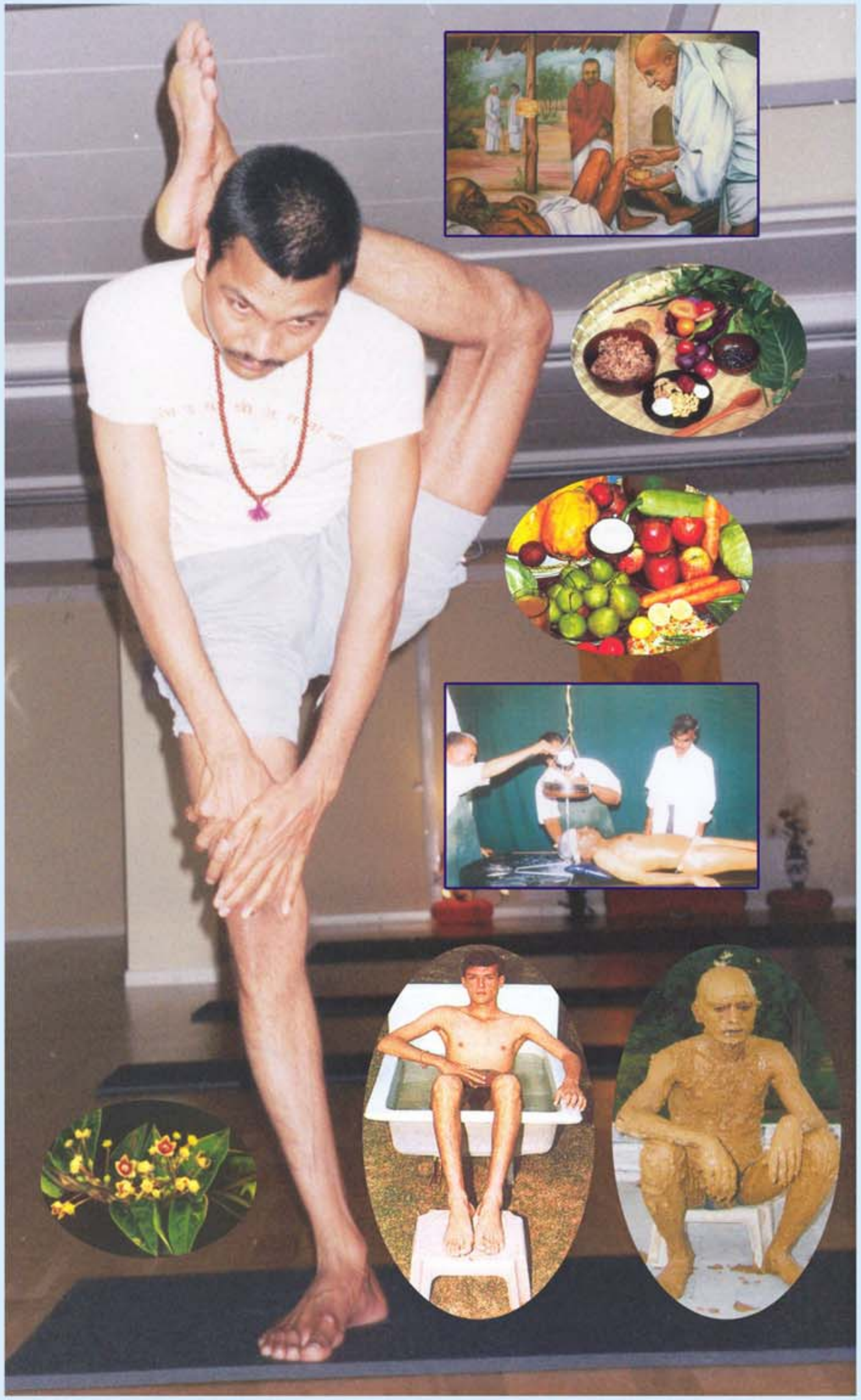

अप्रेल 2005

# रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

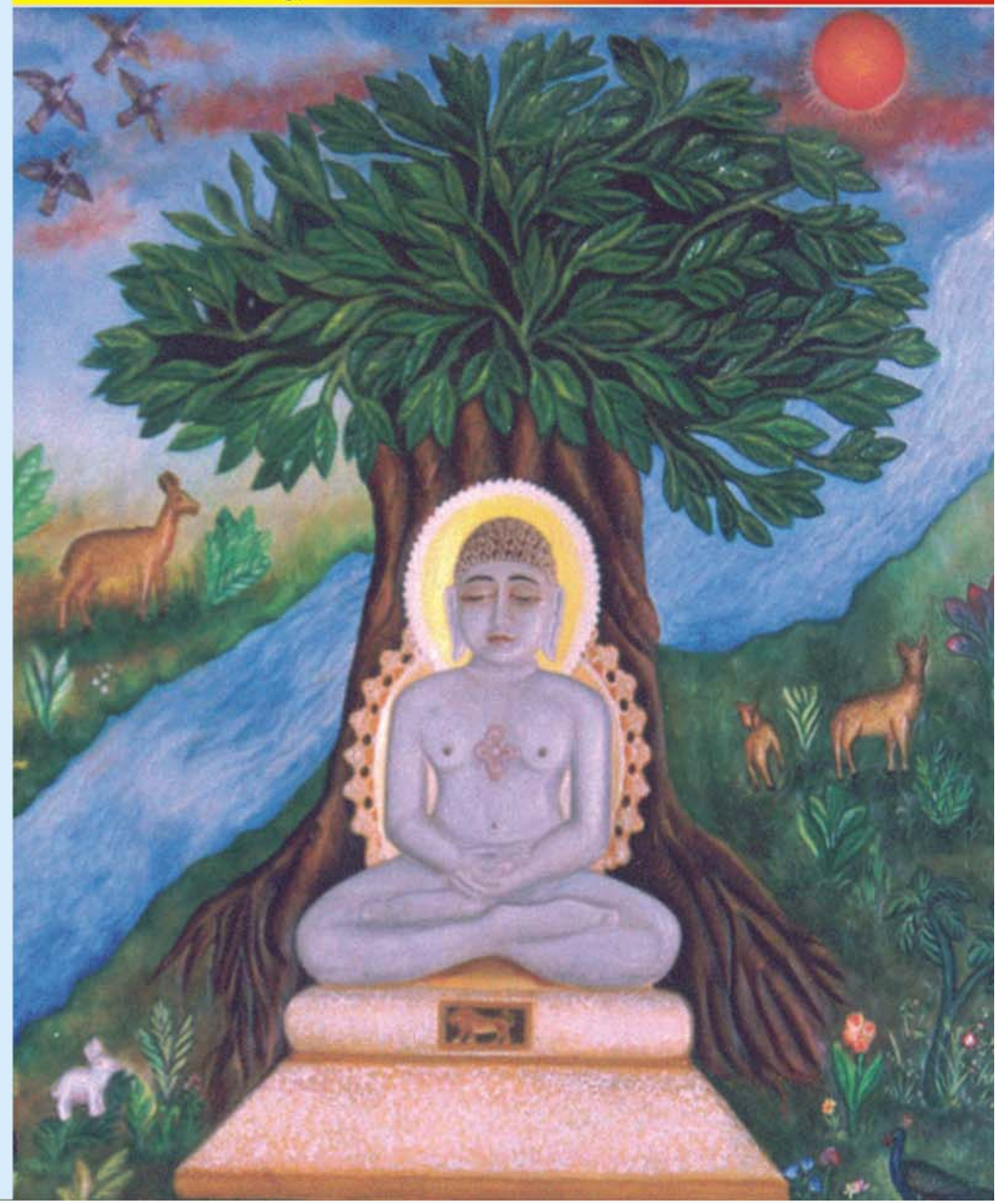

# रूपरेखा

**जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका**

वर्ष : 5 अंक : 4 अप्रैल, 2006

%ekxZn'kZu%
iiT;k çofrZuh lkèoh eatqykJhth

% lEiknd eMy %
Jherh fueZyk iqxfy;k]
Jherh eatq tSu
Jherh lxhrk cjfM+;k ,oa Jh cyoUr tSu

% O;oLFkkid %
Jh v:.k frokjh

एक प्रति : 5 रुपये
वार्षिक शुल्क : 60 रुपये
आजीवन शुल्क : 700 रुपये

: प्रकाशक :
मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने नई दिल्ली–110 013
फोन नं. : 26315530, 9312239709
Website: www.manavmandir.com
E-mail : contact@ manavmandir.com

## इस अंक में

01–आर्ष वाणी –5
02–बोध कथा –5
03–संपादकीय –6
04–गुरूदेव की... –7
05–जीवन प्रसंग –11
06–जवाब साध्वी.. –18
07–गीतिका –20
08–विश्वास(कविता) –21
09–गीत –22
10–स्वास्थ्य –23
11–उठो महान बनो –26
12–बोले तारें –29
13–गीत –32
14–समाचार–दर्शन –33



## : ij[kk& lj{kd x.k

- डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी ,न्यूयार्क
- डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
- श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
- श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
- श्री प्रवीन लता मेंहता, टेक्सास
- श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
- श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
- श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
- श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
- श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
- डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
- श्री जयचन्द लाल सेठिया, कलकत्ता
- श्री कमलसिंह–विमलसिंह बैद ,लाडनूं
- श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
- श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
- श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
- श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
- डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन ,नोएडा
- श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
- श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
- श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
- श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
- श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
- श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
- श्री गुड्डू, संगरूर
- श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
- श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाल
- श्री महावीर प्रसाद किरणाबाई(धुरीवाले)
- श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
- श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
- श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
- श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
- श्री सुरेश सुरेखा आबड़, शिकागो
- श्री हेमेन्द्र दक्षा पटेल, न्यू जर्सी
- श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
- श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, जयपुर
- श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी, अहमदगढ़ वाले, बरेली
- श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सरदारशहर
- श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
- श्री त्रिलोक चन्द नरपत सिंह दूगड़, लाडनूं
- श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
- श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
- श्री धर्मपाल अंजनारानी ओसवाल, लुधियाना
- श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
- श्रीमती मंगली देवी बुच्चा धर्मपत्नी स्वर्गीय शुभकरण बुच्चा, सूरत
- श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
- श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
- श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
- श्री पुरुषोत्तमदास हरीश कुमार सिंगला, लुधियाना
- श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला, संगरूर
- श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
- श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
- श्री सम्पत राय दस्सानी, कलकत्ता,

**जं इच्छसि अप्पणतो जं च न इच्छसि अप्पणतो**

**तं इच्छ परस्स वि, एत्तियगं जिनशासनं**

**अर्थात्** जो अपने लिए चाहते हो वह औरों के लिए भी चाहो जो अपने लिए नहीं चाहते वह औरों के लिए भी मत चाहो यह जैन शासन का सार है।

**शास्त्रवाणी**

---

बोध-कथा

## संत की परीक्षा

दादू बड़े मस्त साधु थे। उन्होने अपने मन और तन को बराबर बराबर क्षमतावान बना लिया था। सलौने नगर सांभर में वे रहते थे।

एक बार दो भक्त मित्रों ने सामूहिक मंत्रणा कर निश्चय कि किसी अच्छे गुरू की तलाश की जाये और उन्हीं को अपना गुरू मान लिया जाए।

दोनों मित्र सांभर नगर (राज.) पहुंच गए। पता किया दादू की कुटिया कहां है ? कुटिया के नजदीक पहुंचे तो एक आदमी सिर मुंडाए, उनके सामने से गुजरा।

मित्रों ने कहा–कितने दिनों में हम लोग यहां पहुंचे। गुरू की खोज में यहां आए कि बीच में नंगे सिर वाले इस अपशकुनी ने रास्ता काट दिया। यह श्रम भी लगता है व्यर्थ ही चला जाएगा।

दोनों मित्र क्रोध में भर गए। उन्होंने सिर मुंडवाए जा रहे उस आदमी को आगे बढ़, तमाचे मार दिए। वह आदमी कुछ न बोला। मौन बना रहा।

पूछ–पाछ करते मित्र कुटिया पर पहुंचे। किसी व्यक्ति से पूछा–संत दादू जी कहां हैं ? उस व्यक्ति ने कहा–अंदर बैठे है चले जाओ! वे अंदर गए तो दादू बोले–आओ! भक्तो! बैठो! कहां से आ रहे हो ?

दोनों मित्रों ने दादू को देखा तो देखते ही रह गए। जैसे पत्थर की मूरत हों। उन दोनों के चेहरे पर एक ही परेशानी थी कि जिस व्यक्ति को हमने तमाचे मारे थे, यह वही चेहरा है। भय से वे कांपने लग गए। संत दादू ने बड़े प्यार से कहा–कांप क्यों रहे हो भाई। कांपना तो मुझे चाहिए था कि परीक्षा में खरा उतरा हूं कि नहीं। यह तो जगत् का व्यवहार है। लोग एक मिट्‌टी की साधारण हांडी को लेने जाते हैं तो उसे भी ठोक–बजा कर देख लेते हैं। और तुम तो गुरू बनाने निकले हो। यदि तुमने जरा परीक्षा ले भी ली तो कौन–सा अपराध कर दिया?

दोनों व्यक्ति दादू के चरणों में गिर पड़े और उनके शिष्य बन गए।





## महापुरूष किसी एक के नहीं होते

महावीर जयन्ती आती है। जैन समाज खुशियों से भर जाता है। लेकिन महापुरूष किसी देश विशेष, जाति विशेष, समाज विशेषया व्यक्ति विशेष के नहीं होते। उनका व्यक्तित्व तो इतना विराट होता है कि देश काल जाति और परंपरा से इतना ऊपर उठ जाता है कि उनको किसी सीमा विशेष में बाधना बहुत मुश्किल है। भगवान महावीर आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व पैदा हुए थे। लेकिन उनके जन्म दिन को आज भी उतना ही उत्साह और उल्लास से मनाया जाता है। भगवान महावीर जाति से क्षत्रिय थे। एक राज घराने में पैदा हुए थे। एक राजकुमार की शरण में बड़े से बड़े राजा महाराजा और छोटे से छोटे हरिजन तक आए सब को समान रूप से अपनाया। जैसे एक राजकुमारको अपनी परंपरा में दीक्षित किया वैसे एक चांडाल को भी दीक्षित किया। भारत के विहार क्षेत्र में पैदा होकर पूरे विश्व के लिए अहिंसा अनेकान्त और अपरिग्रह का उपदेश दिया। प्राणी मात्र पर दया दिखाकर जीओ और जीने दो की अद्‌भुत कला सिखाई।

आज हम खूब धूम धाम से महावीर जयंती का उत्सव मनाते हैं किंतु महावीर जयन्ती मनाने का मतलब आडम्बर प्रदर्शन करना नहीं अपितु देवो भूत्वा देवं नमेत यानी हम स्वंय जिनकी उपासना करते हैं वैसे बनकर दिखाएं। हमारे जो आदर्श हैं उनका अनुशरण करें। कम से कम और नहीं तो जैन समाज तो सारा एक हो जाए। जब हम देखते हैं जैन समाज को टुकड़ो टुकड़ों में बंटा हुआ है तो बड़ी तकलीफ होती है। दूसरे समाज क्या कहेंगे। क्या जैन समाज ऐसा ही है ? भगवान महावीर के उपदेश और सिद्धांत तो कितने ऊंचे हैं और जैन समाज के आपस के ही झगड़े नहीं निपटते। कौन कहे ये भगवान महावीर के अनुयायी हैं। पशु पक्षी भी एक दूसरे के सुख दुःख में अपनी संवेदना दिखाते हैं। एक कोई कौआ मर जाता है तो आस पास के सारे कौए चीखते हैं चिल्लाते हैं। जैन समाज के लोग एक दूसरे के मंदिर और स्थानक में जाना पसंद नहीं करते। इसमें श्रावक समाज और साधु संत सबसे बड़े निमित्त हैं। क्या राग द्वेष से होगा कल्याण ? आज दिगंबर, श्वेताम्बर, मंदिर पंथी, स्थानकवासी, तेरापंथी सब महावीर जयंती को अपने अपने ढंग से मनाते हैं। लेकिन सब एक दूसरे के साथ मिलकर नहीं मनाते। वैसे तो देखा जाए तो महावीर और जैन धर्म किसी समाज या विशेष या व्यक्ति विशेष के नहीं है शुरूआत में भगवान महावीर के धर्मसंघ पर क्षत्रियों/ब्राह्मणों का प्रभाव था। लेकिन आज तो बनियों का आधिपत्य है और आज बनियों ने जैन धर्म को टुकड़ो टुकड़ो में बांट रखा है। यही कारण है कि लोग जैन धर्म को अच्छा मानते हुए भी इसको स्वीकार नहीं करते इसीलिए जैन धर्म फैल नहीं सका उल्टा जैन परिवार की नई पीढ़ी है वह भी जैन धर्म से उदासीन होती जा रही है अब भी समय है। सब संभल जाएं और मिल जुलकर महावीर जयंती मनाएं।

# केशी गौतम प्रसंग से क्या जैन समाज सबक सीखेगा ?

**आचार्य श्री रूपचन्द्र**

प्रथम गणधर इन्द्रभूति गौतम चौदह पूर्वों के अतल श्रुतसागर के पारगामी गौतम! भगवान महावीर के कैवल्य हिमालय से निःसृत अमृत वाणी गंगा को धारण करने वाले भागीरथ गौतम! विनय और समर्पण के उज्जवल समुन्नत शैल शिखर गौतम! तीर्थंकर पार्श्वनाथ और तीर्थंकर महावीर की गंगा यमुना धारा के प्रयागराज गौतम! अद्भुत लब्धि चमत्कारों के क्षीर सागर गौतम।

गौतम का व्यक्तित्व अनन्त है। जैन शासन को गौतम का अवदान अनन्त है। और अनन्त है सम्पूर्ण मानव जाति को गौतम का सम्प्रदायातीत ज्योर्तिमय अवदान। गौतम के आलेख के बिना भगवान महावीर की धर्म–तीर्थ प्रवर्तन की ज्योति यात्रा का इतिहास अधूरा है। गौतम के उल्लेख के बिना अनन्त श्रुत –संपदा पर भगवान महावीर के हस्ताक्षर भी अधूरे है।

अनन्त चक्षु महावीर के प्रथम शिष्य है इन्द्रभूति गौतम। इसलिए गौतम महावीर की तीर्थ परंपरा के सूत्रधार भी हैं। किन्तु जैन परंपरा महावीर से पहले भी है। आगमों में स्पष्ट उल्लेख है कि महावीर के माता पिता तेइसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के अनुयायी श्रावक थे। महावीर के युग में भगवान पार्श्वनाथ के प्रतिनिधि ज्योतिर्धर आचार्य विद्यमान थे। भगवान महावीर और तथागत बुद्ध के शिष्यों के साथ पार्श्वनाथीय परंपरा के मुनियों के अनेक मिलन–प्रसंग जैन तथा बौद्ध वांड् मय में मिलते है। इन सबसे स्पष्ट सिद्ध होता है कि महावीर के समय भगवान पार्श्वनाथ की शिष्य संपदा समृद्ध तथा अपने में वर्चस्वशील स्वरूप धारण किए थी।

इसके साथ–साथ यह भी परंपरा सम्मत तथ्य है कि भगवान महावीर भगवान पार्श्वनाथ की परंपरा में दीक्षित नहीं हुए। इसका भी कारण है। क्योंकि तीर्थंकर स्वंय संबुद्ध होते है, आत्मदीक्षित होते हैं। तीर्थंकर कभी किसी परंपरा में दीक्षित नहीं होते हैं। महावीर भी स्वयं संबुद्ध है, आत्म दीक्षित है। केवल ज्ञान के अनंतर भगवान ने धर्म तीर्थ का प्रवर्तन किया। हजारों साधु साध्वियों तथ लाखों श्रावक श्राविकाओं ने महावीर के तीर्थ में प्रवेश किया। थोड़े ही समय में भगवान महावीर के धर्म संघ ने भी समर्थ समृद्ध तथा वर्चस्वशील स्वरूप धारण कर लिया। उस समय सबसे बड़ा प्रश्न था दो समर्थ, समृद्ध परपराएं एक धारा में कैसे जुडे ? भगवान पार्श्वनाथ



के समय को अभी 250 वर्ष ही हुए थे। फिर श्रमण केशी कुमार जैसे अवधि ज्ञान संपन्न विद्याचरण पारगामी–ओहिनाण सुएबुद्धे, विज्जाचरण पारगे आचार्य उस परंपरा का समर्थ प्रतिनिधित्व कर रहे थे। इधर भगवान महावीर के तेजोमय नेतृत्व में तेजी से उपर उठता हुआ नवोदित धर्म संघ था। उस स्थिति में एक परंपरा का दूसरे परंपरा से जुड़कर एकता बद्ध होना आश्चर्य ही माना जाएगा यद्यपि ये दो धाराओं का संगम था, किंतु संगम में अपनी स्वतंत्र पहचान का उत्सर्ग होता ही है। और इस आश्चर्यपूर्ण संगम का बहुत कुछ श्रेय गणधर इंद्रभूति को ही कहा जाता है।

**केशी–गौतम संवाद**

श्रावस्ती का प्रसंग हैं। श्रमण केशी कुमार अपने शिष्य समुदाय के साथ तिंदुक नामक उद्यान में पधारे। उसी समय गणधर इंद्रभूमि गौतम भी अपने शिष्य समुदाय के साथ श्रावस्ती आए और कोष्ठक नामक उद्यान में विराजमान हुए। श्रमण केशी कुमार और गणधर गौतम के शिष्यगण आते जाते परस्पर एक दूसरे को देखते और इस तरह के प्रश्न उनके मनों में उठते–

**केरिसो व इमो धम्मो, इमो धम्मो व केरिसो,**<br>**आयार धम्म पणिही, इमा व सा व केरिसी।**

यह धर्म कैसा है और वह धर्म कैसा है ? यह आचार प्रणिधि कैसी है और वह आचार प्रणिधि कैसी है ? दोनों श्रमण श्रेष्ठों ने शिष्यों के प्रश्नाकुल चेहरों को देखा, शंकाकुल मनो को पढ़ा और परस्पर समागम का निर्णय लिया–

**अह ते तत्थ सीसाणं, विन्नाय पवितक्कियं,**<br>**समागमे कयमई, उभयो केसिगोयमा।**

श्रमण केशी कुमार पार्श्व परंपरा का प्रतिनिधित्व करते है। पार्श्वनाथ का श्रमण परिवार ज्येष्ठ कुल है। इसे ध्यान में रखते हुए गणधर गौतम अपने शिष्य परिवार के साथ वहां आते हैं, जहां श्रमण केशी विराजमान है। श्रमण केशी गौतम के सम्मुख आते हैं, इनका स्वागत करते है, समान रूप से आसन प्रदान करते हैं। शास्त्रकार कहते हैं, दोनों महाशय /महाभाग वहां विराजमान ऐसे सुशोभित हो रहे हैं जैसे कि चांद और सूर्य विराजमान हो।

परिषद में दोनों परंपराओं के श्रमण गण तथा श्रावक गण तो उपस्थित है ही इतर धर्मावलंबी समाज भी बड़ी संख्या में उपस्थित है। शास्त्रकार के शब्दों में – देव दाणव गंधव्वा , जक्ख रक्खस किन्नरा, अदिस्साणं च भूयाणं आसी तत्थ समागमो' उस परिषद में देव, दानव, गंधर्व, यक्ष, राक्षस और किन्नर भी अदृश्य रूप से उपस्थित हैं। सबके मनों में जिज्ञासा है, कुतूहल है, तरह–तरह की अटकलबाजियां हैं

श्रमण केशी कुमार ने गौतम गणधर से पूछा–

चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ
देसिओ बहुमाणेण, पासेण य महामुणी।
एग कज्ज पवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ?
धम्मे दुबिहे मेहावि , कहं विप्पच्चओ न ते ?

भगवान पार्श्वनाथ ने अहिंसा, सत्य, अदत्तादान और बहिर्द्धादान, इस चतुर्यामात्मक धर्म की व्यवस्था दी। भगवान महावीर ने अहिंसा , सत्य, अदत्तादान, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह यह पांच महाव्रतात्मक धर्म व्यवस्था दी। एक ही उद्‌देश्य के लिए प्रपन्न साधना में यह विभेद क्यों ? इन दो प्रकार की धर्म साधनाओं को देखकर तुम्हारे मन में किसी प्रकार का संशय नहीं होता ?

गणधर गौतम ने बड़ा विवेक संगत उत्तर देते हुए कहा–'पन्ना समिक्खएधम्मं'– धर्म की समीक्षा प्रज्ञा से होती है इसके अलावा सारा व्यवहार है। ये धर्म के दो प्रकार नहीं साधना व्यवस्था के दो प्रकार है। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव तथा अंतिम तीर्थंकर महावीर के समय ही पंचमहाव्रतात्मक साधना व्यवस्था का विधान हैं। इसका प्रमुख कारण उस युग के व्यक्तियों की चित्त दशा है। भगवान ऋषभदेव का युग ऋजु–जड़ है। इतना सरल है उस युग का चित्त, जितना उसे बताया जाएं, वह उतना सा ही ग्रहण करता है। अर्थ भी वह शब्दात्मक ही ग्रहण करता है, भावात्मक नहीं। अतः उन्हें साधना की व्यवस्था विस्तार पूर्वक देनी पड़ती है।

अंतिम तीर्थंकर का युग वक्र–जड़ है। इस युग का चित्त इतना जटिल है कि जो भी उसे बताया जाए वह उसे सरलता से नहीं , वक्रता से पकड़ता है। वह उस साध ाना विधान में से तर्क पूर्ण रास्ते खोजता रहता है। इस दृष्टि से उसे स्पष्ट विस्तार पूर्वक विधान दिया जाता है।

शेष बाईस तीर्थंकरों का युग ऋजु प्राज्ञ होता है। सरल भी और ग्रहणशील भी। जितना उसे बताया जाए, उसे शब्दात्मक, भावनात्मक सब तरह से आशयपरक अर्थ ग्रहण करता है। इसलिए उसे दिया गया संक्षिप्त साधना –विधान भी पर्याप्त होता है।

चतुर्यात्मक धर्म साधना और पंच महाव्रतात्मक साधना व्यवस्था के पीछे प्रमुखतः यही दृष्टिकोण है । यह मात्र व्यवस्था परक भेद है, साधना परक दृष्टि से दोनों एक ही है। कोई भी अंतर नहीं है।

गौतम के इस उत्तर से सारी परिषद को संतोष हुआ। तब श्रमण केशी कुमार ने दूसरा प्रश्न उठाया–



अचेलगो य जो धम्मो, जो इमो सन्तरूत्तरो
देसियो वद्धमाणेण, पासेण य महाजसा
एग कज्ज पवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं
लिंगे दुविहे मेहावि कहं विपच्चओ न ते।

महामुनि वर्धमान ने जो आचार धर्म की व्यवस्था दी है। वह अचेलक है। महायशस्वी पार्श्व ने जो आचार धर्म की व्यवस्था दी है, वह सांतर – उत्तर है, वर्ण आदि से विशिष्ट वस्त्र वाली है। एक ही उद्‌देश्य से हम चलते है फिर यह भेद का क्या कारण है? मेधाविन् , वेष के इन दो प्रकारों में तुम्हें संदेह कैसे नहीं होता ?

गौतम ने कहा –विन्नाणेण समागम्म धम्म साहणं मिच्छियं–विज्ञान से जानकर`ही धर्म के साधनों की व्यवस्था दी जाती हैं। लोकप्रत्यय, जीवन यात्रा का निर्वाह तथा श्रमण–भावग्रहण , लोक में वेष–धारण के प्रमुखतः यही प्रयोजन हैं। इनकी व्यवस्था मात्र व्यवहार है। जबकि निर्वाण की वास्तविक साधना में तो निश्चय दृष्टि से उसके साधन ज्ञान, दर्शन चरित्र ही है–''नाणं दंसण चेव, चरित्तं चेव निच्छए''।

केशी गौतम की प्रश्न–उत्तर श्रृंखला लंबी है। उत्तराध्ययन – सूत्र के इस प्रसंग पर पूरा एक अध्ययन ही वर्णित है। किंतु शेष सारे प्रश्न अध्यात्मिक तथा साधना के संदर्भ में हैं। ये दो प्रश्न और उत्तर ही प्रमुखतः परंपरा भेद की सूचना देते है। पर यह भी स्पष्ट हैं कि ये दोनों परंपरा भेद अपने में असाधारण हैं इन भेदों को सुलझालेना कोई आसान काम नहीं था। यह गणधर गौतम की विलक्षण प्रतिभा तथा अनाग्रहशील प्रज्ञा का ही परिणाम था कि बिल्कुल सहजता से दोनों पर्वतकाय भेद चुटकी भर में सुलझा लिए गए। श्रमण केशी कुमार का उदात्त चिंतन भी इसमें पूरा सहयोगी बना। इस तरह पार्श्व–महावीर की गंगा–जमुना धारा का संगम बना, जिसमें प्रयागराज की भूमिका गणधर गौतम ने निभाई।किंतु यह संभव तभी हो पाया , जब केशी गौतम अपनी परंपरा–ज्येष्ठता अथवा परंपरा–श्रेष्ठता में नहीं उलझे, दोनों ने ही साधना को आत्म–भूमिका पर प्रतिष्ठा दी, उस अध्यात्म प्रतिष्ठा को ही सर्वोपरि महत्व दिया। परिणामतः दोनों मुनि श्रेष्ठों का यह मिलन प्रसंग जैन इतिहास का एक एतिहासिक महत्वपूर्ण अध्याय बन गया। गणधर गौतम के इस अमूल्य अवदान के लिए जैन परंपरा सदा–सदा ऋणी रहेगी।

अपने छोटे–छोटे परंपरा भेदों में बैठा उलझा जैन समाज क्या केशी–गौतम संवाद से थोड़ा बहुत भी सबक लेगा ?

# ओशो रजनीश–एक अनूठा व्यक्ति

**○ पूज्य गुरूदेव की कलम से**

गतांक से आगे–

उन दिनों आचार्य रजनीश अपने विचार/ दर्शन और ध्यान विधियों को एक सुनिश्चित दिशा और स्वरूप प्रदान करने मे लगे थे। इस बार जब मेरा उनसे मिलना हुआ कुछ विदेशी स्त्री–पुरूषों पर वे ध्यान के प्रयोग करने में विशेषतः संलग्न थे। उनमें से एक विदेशी युवक और युवती पर किए जा रहे ध्यान प्रयोग के बारे में ओशो ने मुझे बताया–अपने जीवन में अब तक ये दोनों एक दूसरे से बिल्कुल अनजान रहे हैं। मेरे पास ध्यान अभ्यास के लिए आए। मैनें इनके ध्यान अभ्यास के साथ तंत्र के एक प्रयोग को जोड़ा। पिछले एक सप्ताह से ये दोनों उसी ध्यान तंत्र प्रयोग में से गुजर रहे हैं। इस प्रयोग के तहत एक दूसरे के आमने सामने बैठकर से परस्पर आखों में आखें डालकर ध्यान करते हैं। शरीर पूर्णतया शिथिल व मन पूर्णतया तनाव मुक्त और पश्चिम के चित्त में वर्जनाओं की अवधारणा वैसे भी नहीं होती, इसलिए ये प्रयोग इन लोगों पर सहज प्रभावी होते हैं।

ओशो ने कहा–परस्पर आखों में आखें डालकर देखने से राग भावना/ काम वासना स्वभावतया जाग जाती है। इसीलिए भारतीय चिंतन में सन्यासी के लिए तो यह निषिद्ध है ही, गृहस्थी को भी यह निर्देश है कि पर–पुरूष और पर–स्त्री परस्पर आंखों में आखें डालकर वार्तालाप न करें। इसके पीछे प्रमुख कारण राग भाग के जागरण का ही है।

इन दोनों के साथ भी ऐसा हुआ। ये प्रतिदिन केवल एक घंटा इस अभ्यास में बैठते। चौथे दिन तक ये परस्पर कामासक्त हो गए। पांचवे छठे दिन तक वह वासना चरम सीमा तक पहुंच गई। सातवे दिन जब इनकी वासना का बाध टूटने के कगार पर था, तभी मैंने ध्यान संकल्पों और सम्मोहक निर्देशों (हिप्नोटिक सजेशन) द्वारा उस काम ऊर्जा का रूपान्तरण कर दिया। परिमाणतः वह काम ऊर्जा समाधि अनुभव में परिणत हो गई। अब ये दोनों युवक युवती सेक्स वासना से सर्वथा मुक्त है।

अगर ऐसा हुआ तो अद्‌भुत है, मैंने कहा। किंतु ऐसे प्रयोग बहुत विचारणीय भी है। क्योंकि यह राह बहुत फिसलन भरी है, ऐसा शायद आप भी मानेंगे। किसी



समर्थ गुरू के मार्ग दर्शन में ऐसी साधना भले ही संभव हो जाए और उसमें भी कोई विरला ही साधक भले सफल हो जाए। पर साधारणतया इस तंत्र साधना को व्यवहारिक नहीं माना जा सकता। भारतीय साधना पद्धतियों में इस वाम_मार्गी तंत्र साधनाकी चर्चा भी है। शैव, शाक्त एवं बौद्ध परंपरा में इस पर साहित्य भी सरजा गया है। इतना होने पर भी आप स्वंय जानते हैं यह साधना भारतीय चिंतन और व्यवस्था में अपना स्थान कभी नहीं बना पाई। मेरी समझ में इसके प्रमुख दो कारण रहे हैं। पहला, यह रास्ता बहुत फिसलन भरा हैं किसी समर्थ वीतरागी सद्‌गुरू के मार्ग दर्शन में ही इस वाम मार्गी तंत्र साधना के प्रयोग संभव है। दूसरा, इसके नाम पर आधे–अधूरे गुरूओं द्वारा समाज में पाखंड और अनाचार फैलाने की सारी संभावनाए हैं। संभवतः इन्हीं किन्ही कारणों में भगवान महावीर, भगवान बुद्ध, आदि शंकराचार्य जैसे महामानवों ने अपनी साधना परंपरा में इस वाम मार्ग का विधान नहीं दिया। इसके उपरांत भी वैदिक और बौद्ध परंपरा में वाम मार्गी तंत्र समर्थन के अभाव में धीरे–धीरे वह स्वंय ही निरस्त हो गया। जैन साधना में मंत्र के साथ–साथ तंत्र का विकास भी हुआ। पर तंत्र साधना के वाम पक्ष को उसने कभी स्वीकार नहीं किया। उसने अपनी साधना पद्धति में तप और सयंम व्रत प्रधान शैली को ही प्रधानता दी। इस दृष्टि से आपका चिंतन क्या है?

यह ठीक है कि यह रास्ता बहुत फिसलन भरा है, ओशो बोले, किंतु सेक्स ऊर्जा को समाधि अनुभव में रूपान्तरित किए बिना उससे मुक्ति भी संभव नहीं है। शरीर के तल पर जब हमारी जीवन ऊर्जा (लाईफ फोर्स) स्खलित होती है, तब वह सृष्टि का कारण बनती है। उसी प्राण ऊर्जा का अगर रूपान्तरण हो जाए, वह मुक्ति का कारण बन जाती है। संभोग या समाधि, सृष्टि या मुक्ति जीवन उर्जा की, इन दोनों में से एक परिणति निश्चित है। जब उसको अपनी अभिव्यक्ति के लिए दोनों मार्ग नहीं मिलते है, तब व्यक्ति के भीतर–भीतर रूग्ण चित्तता जन्म ले लेती है, जो कभी विक्षिप्तता के रूप में, कभी विकृत यौन चेष्टाओं के रूप में और कभी तन–मन के स्तर पर नाना बीमारियों के रूप में प्रकट होती रहती है। इसलिए वाम मार्ग फिसलन भरा भले ही हो, सेक्स उर्जा को समाधि अनुभव में रूपान्तरित करने का एक त्वरित साधन है, ऐसा मेरा अभिमत है।

अब हम तप सयंम व्रतमूलक साधना शैली को लें। इस विषय में मेरा ऐसा मंतव्य है कि यह दमन का रास्ता है , रूपांतरण का नहीं। जो जीवन उर्जा शरीर

तल की ओर प्रवाहित हो रही है, योग विद्या की भाषा में कहें तो जो उर्जा मूलाधार/स्वाधिष्ठान चक्रों की ओर प्रवाहित हो रही है, उसे मणिपूर नाभि चक्रसे ऊपर के चक्रों अनाहत विशुद्धि और आज्ञा चक्र की ओर परिवर्तित करना आवश्यक होता है। अगर वह ऊर्ध्वगामी नहीं बनती है तो तप के द्वारा शरीर को सुखने का फायदा क्या है ? व्रत और सयंम के नाम पर आप इंद्रिय विषयों से दूर भागते रहें। किंतु चित्त वृत्तियों में अगर उन विषयों के प्रति आकर्षण बना हुआ है, वह सयंम इंद्रिय दमन ही पैदा करेगा। मेरे अनुभव में आज का सयंम और त्याग, भोग से भी गया–गुजरा है। भोग में आप भोग के समय ही भोग भोगते है। किंतु इस तथाकथित त्याग में आप भोग न भोगते हुए भी 24 घंटे भोग में होते हैं। मेरे पास सभी मत पथों के अनेक साधु संन्यासी आते रहे हैं। समाज की नजरों में उनमें से कोई महा तपस्वी है, कोई मौन व्रती है, कोई महान योगी है, कोई बड़ा पहुंचा हुआ संत हैं, उन संत महात्माओं ने व्यक्तिगत चर्चाओं में यह स्वीकारा है कि वर्षो के तप और सयंम के बावजूद वे विषय–वासनाओं से मुक्त नहीं हो पाए है। इस कारण उन्हें निरंतर अपने साथ ही लड़ाई लड़नी होती है। यह सब क्यों है ? वर्षों की तप सयंम के बाद भी उनको समाधि का अनुभव क्यों नहीं हो रहा है? क्योंकि भीतर की वासनाओं को केवल दबाया जा रहा है। परिमाणतः वे दबी हुई इच्छाएं/वासनाएं अवसर मिलते ही भयंकर प्रतिक्रिया के साथ प्रकट होती हैं। उनका विस्फोट निश्चित है, क्योंकि अगर जल निरंतर पूरे वेग से आ रहा है और उसको आप निकलने का कोई रास्ता नहीं दे रहे है। तो वह टकरा टकराकर बांध को एक दिन तोड ही देगा। अपनी इच्छाओं वासनाओं को सयंम और व्रतके बांध से कब तक रोके रखेंगे। अगर उनको बाहर प्रकट होने का प्रकृत मार्ग आप नहीं देते हैं, वह अप्राकृतिक मार्ग से प्रकट होगा। किंतु रूक नहीं सकता। उस स्थिति में विकृत कामाचार जन्म लेगा। वैसी घटनाएं आए दिन हमारी आखों के सामने आती रहती हैं। इस सारे जीवन गणित को सामने रखते हुए, वामाचार का निषेध करते हुए क्या आप सयंम और व्रत के नाम पर चलने वाले विकृत कामाचार का समर्थन करेंगे ?

मेरा समर्थन न विकृत कामाचार को है न वामाचार को, मैंने कहा। इंद्रिय दमन अथवा इंद्रिय भोग, ये दोनों ही मार्ग समाधि और मुक्ति के नहीं हो सकते। साधना मार्ग चाहे तप और सयंम का हो अथवा वाम मार्गी तंत्र प्रयोग का, दोनों अपने में साधन हैं, साध्य नहीं। कोई साधक वाम मार्ग से समाधि तक पहुंचता है,



उसमें किसी को क्या आपत्ति हो सकती है। मेरा प्रश्न मान्यता और स्थापना का है कि समूह के स्तर पर किस साधना विधि को मानयता दी जाए। मेरा अपना अभिमत यह है कि अगर हम वामाचारीय तंत्र साधना को मान्यता देते हैं तो, न चाहते हुए भी, हम पाखंड और अनाचार को समाजिक मान्यता दे देते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि इंद्रिय दमन प्रधान साधना–शैली में पाखंड और अनाचार बिल्कुल नहीं है। मुझे यह कहने में भी संकोच नहीं है कि आज का मुनि आचार आत्म–भूमिका पर कम और समाज–भय की भूमि पर अधिक टिका है। फिर भी सयंम व्रतमूलक साधना विधि के समर्थन में मैं इसीलिए हूं, क्योंकि इसके नाम पर होने वाला पाखंड और अनाचार कभी समाज से मान्यता नहीं पा सकता है। इस साधना विधि से जुड़ा व्यक्ति छल–कपट के सहारे मायाचार चला सकता है, किंतु इस अभ्यास के नाम पर खुला अनाचार का व्यापार नहीं चला सकता है, जबकि वामाचार में जो अनाचार विधि सम्मत होने के कारण सामाजिक मान्यता स्वंय पा लेता हैं उसके परिणाम कितने खतरनाक हो सकती हैं, जिसकी कल्पना भी भयावह है।

अब रहा प्रश्न इंद्रिय दमन का। यह सही है कि इस साधना का आरंभ इंद्रिय नियमन से ही होता है। किंतु इंद्रिय नियमन का अर्थ इंद्रियदमन कभी नहीं होता। उसका अंतिम लक्ष्य इंद्रिय–विजय होता है। इसलिए तप और सयंम द्वारा किए गए इंद्रिय नियमन में से इंद्रिय विजय प्रगट होना ही चाहिए और इंद्रिय विजय तभी संभव है जब साधक का चित्त वासना मुक्त हो जाए, जब प्राण उर्जा सेक्स वासना से उपर उठकर समाधि अनुभव में उतर जाए, जब कुंडलिनी शक्ति जागृत हो, मूलाधार से उठकर सहस्त्रासार में अवस्थित हो जाए। उसी इंद्रिय जय में से उद्भासित होता है अर्हत्, जिसके उदय होने के साथ ही समस्त इच्छाएं/वासनाएं और मोह जन्य तिमिर धाराएं स्वंय आत्म ज्ञान के प्रकाश में विलीन हो जाती है।

इंद्रिय सयंम अगर इंद्रिय जय तक नहीं पहुंच पाता है तो वह इंद्रिय दमन बनकर रह जाता है। यह भी सही है आज के साधना जगत में इंद्रिय जय के दर्शन अत्यंत दुर्लभ है। लगभग इंद्रिय दमन और देह पीडन ही अधिक दिखाई दे रहा है। सभंवतः इसीलिए आप इसे दमन का रास्ता मानते हैं, रूपांतरण का नहीं। किंतु इस इंद्रिय दमन का कारण तप सयंम नहीं हे। इसका प्रमुख कारण है तप और सयंम के साथ गुरूगम ध्यान परंपरा का न होना। मार्ग चाहे तप सयंम

का हो अथवा तंत्र साधना का यह ध्यानभ्यास ही उर्जा का रूपांतरण करता है। ध्यान अभ्यास के अभाव में तप संयममूलक साधना–शैली इंद्रिय दमन और देह पीड़न बनकर रह जाती है, तो वाम मार्गी तंत्र साधना आत्म पतन का कारण बन जाती है। इसलिए तप और सयंम के साथ ध्यान प्रयोग जुड़ना जरूरी है। हम भगवान महावीर को लें। उनका साधना काल कठोर तपश्चर्या से भरा पड़ा है। किंतु उनका हर तप ध्यान के साथ जुड़ा हैं। शरीर को भूखा रखने के लिए अथवा देह पीड़न के लिए उनका तप बिल्कुल नहीं है। वे ऐसे तप के समर्थन में भी नहीं है। वे उसी तप का समर्थन करते हैं जो ध्यान में सहयोगी हो। दुर्भाग्यवश वे ध्यान प्रयोग आज परंपरा के पास नहीं है। केवल तप हैं। उस तप के साथ ध्यान जुड़ जाये, तो मेरी दृष्टि में सेक्स उर्जा के रूपांतरण की, इससे बढ़कर प्रभावी साधना कोई नहीं हो सकती।

आचार्य रजनीश मेरे इस उत्तर से संतुष्ट नहीं थे। उसका प्रमुख कारण शायद वर्तमान में प्रचलित आचार–शैली था। किंतु किसी भी सिद्धांत का निर्धारण शाश्वत की भूमि पर होता है, वर्तमान के आचरण पर नहीं। उस अपेक्षा से मेरी आज भी यही सोच है कि समूह साधना और सामाजिक सुचारूता के लिए सयंम व्रतमूलक विधि ही श्रेष्ठ है। आचार्य रजनीश ने आगे चलकर वाममार्गी तंत्र साधना के प्रयोग काफी खुले रूप से अपने शिष्यों/सन्यासियों के बीच किए। पत्र –पत्रिकाओं में उन प्रयोगों की चर्चाएं भी प्रचुर प्रकाशित हुई। व्यापक स्तर पर समाज के मन में ओशो की प्रखर वक्तृता, वाणी की सम्मोहकता और क्रांतिकारी तर्क–संगत विचार शैली के प्रति आदर भाव होते हुए भी वह उनके वाम मार्गी तंत्र प्रयोगों को कभी भी आत्मसात् नहीं कर पाया, ऐसा मेरा अभिमत है।

## अर्न्तराष्ट्रीय नव संन्यास

ओशो ने उन्हीं दिनों परंपरागत संन्यास व्यवस्था की लीक से हटकर एक नई संन्यास अवधारणा का प्रवर्तन किया था। जिसका नाम रखा–अर्न्तराष्ट्रीय नव सन्यास इस संन्यास में दीक्षित होने वाले व्यक्ति को वे भगवां बाना, नया नामकरण और अपने चित्र युक्त माला प्रदान करते। इसके अलावा इसमें उसे न गृह त्यागी बनना होता, न गृहस्थ आश्रम की प्रवृत्तिया से उपरत होना पड़ता। इस संदर्भ में एक बार मैनें कहा–इस संन्यास विधि में जब किसी नियम संयम का पालन नहीं करना होता हैं, तब इसे संन्यास दीक्षा कहना कहां तकउचित है ? परंपरागत सन्यास में दीक्षित मुनि अथवा स्वामी को अहिंसा, सत्य अचौर्य ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह जैसे अनेक व्रतों का पालन करना होता हैं इन महाव्रतों की



साधना की दृढ़ता के लिए अनेक समाचारी नियमों का अभ्यास करना होता है। यह साधना और अभ्यास गृहस्थ आश्रम में नहीं के बराबर संभव हैं इसलिए संन्यास की लिए गृह त्याग अनिवार्य माना गया है। आपने अपनी संन्यासी अवधारणा में महाव्रतों की साधना समाचारी पालन और गृह त्याग जैसा कुछ भी नहीं रखा है। फिर संन्यास की पहचान के रूप में बाना, नाम और माला भी क्यों दिया जाना चाहिए। कोई हिंसा, असत्य अब्रह्मचर्य आदि आचरण भी करता रहे और संन्यास का बाना भी रखे , यह संन्यास अवधारणा का अवमूल्यन है, समाज में आचारीय श्रेष्ठ मूल्यों को नीचे खिसकाना है। मेरी दृष्टि से संन्यास के साथ ऐसी छेड़छाड़ नहीं होनी चाहिए।

ओशो मुस्कराए। फिर बोले– मै परंपरागत सभी मूल्यों का अवमूल्यन ही नहीं, विघटन देखना चाहता हूं। जो परंपरा के नाम पर आज ढोया जा रहा है, वह बेजान हैं। आज परंपरा के पास साधना कहां हैं ? सिर्फ कुछ बाह्याचार और अनुष्ठान है, जिसके नाम पर श्रद्धा का शोषण हो रहा है, अपने–अपने पाखंड चलाए जा रहे है, ये पाखंड जितने जल्दी टूट सकें, उतना ही शुभ है। जब कभी इन परंपराओं का सूत्रपात हुआ, उसके पीछे विशेष सोच रही होगी।किंतु आज ये प्राण रहित लाशें हैं, जिनको दफना/जला देना ही श्रेष्ठ है।

ओशो जैसे एक ही सांस में यह सब बोल गए। मैनें वार्ता के सूत्र को अपने हाथ में लेते हुए कहा–यह तो परंपरा के साथ जुड़ी सचाई है। आज जो आप एक साधना परंपरा का आरंभ कर रहे हैं, हो सकता है और बहुत संभव है कल तक उसमें भी जड़ता आ जाए। और वही हालत हो जाए जो अन्य परंपराओं में आप देख रहे हैं।

बिल्कुल हो सकता हैं, वे बोले। मेरे साथ भी कल ऐसा हो सकता हैं। निष्प्राण परंपरा केवल शब्दों का भार ढोती हैं और जब भी ऐसा हो, चाहे वह फिर मेरे साथ भी हो, उस स्थिति में उस जड़ता को उसके नाम पर खडे किए पाखंड को तोड़ना ही चाहिए। ऐसा सदा होता रहा है और होना भी चाहिए।

अब रहा प्रश्न मेरे संन्यास के साथ अहिंसा आदि महाव्रतों के संकल्प का। मेरे चिंतन में अहिंसा आदि का अभ्यास जैसा प्रयास ही बेमानी है। अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य ये सब तो आत्मा की अवस्थाएं हैं। जब हमारे भीतर अपने–पराए का भेद खत्म हो जाता है, मैत्री भाव का उदय होता है, तब चित्त में स्वंय अहिंसा प्रकट हो जाती है। ऊपर से आप चींटी बचाते चलें, भीतर से आदमी का शोषण करते

रहे, यह कैसी अहिंसा है? तलवार से आप परहेज रखें और कलम की नोक से उम्र भर गुलामी में ढकेल दें, यह कैसी अहिंसा है ? अहिंसा जब भीतर से प्रकट होगी, वही सच्ची अहिंसा होगी। इसलिए अहिंसा का व्रत अथवा अहिंसा धर्म का पालन/अभ्यास , आदि अपने में कोई अर्थ नहीं रखते। यही स्थिति सत्य/ब्रह्मचर्य आदि की है। जब हमारा चित्त कषाय/वासना मुक्त हो जाता है, उसमें से प्रकट होती है अहिंसा, उसी में से प्रकट होता है सत्य/ब्रह्मचर्य आदि। इसलिए मैनें अपने सन्यास में किसी व्रत का विधान नहीं रखा है।

आत्मा की ये अवस्थाएं किसी साधना/अभ्यास के बिना क्या स्वंय प्रकट हो जाएंगी ? कषाय/वासना से मुक्ति क्या अनायास मिल जाएगी ? मेरा प्रश्न था।

यह सब होगा ध्यान के अभ्यास से। इसलिए मैं अपने संन्यासियों को ध्यान देता हूं, केवल ध्यान–ओशो बोले।

फिर भगवां बाना माला आदि क्यों आवश्यक हैं मैने पूछा। ध्यान में मनस् क्रांति घटित हो जाए, फिर बाना बदलने पर आप इतना बल क्यों देते हैं?

वह इसलिए, वे बोले, जिससे अपने संन्यास के प्रति सदैव जागरूक रहे। यह भगवां बाना और माला उसे निरंतर स्मरण कराएगी कि तुम संन्यासी हो, इसलिए गृहस्थ कर्म में प्रवृत होते हुए भी तुम्हारा आचरण संन्यास जैसा होना चाहिए।

भगवां बाना यदि संन्यास की सतत स्मृति देता है, तो व्रत/सयंम उसे अपने संन्यास पथ पर अविचलित रहने का संकल्प बल देता है, मैंने कहा। प्रत्युत व्रत संयम और तप उर्जा रूपान्तरण में ध्यान योग में प्रबल सहयोगी बनते हैं। बाना और माला तो हो, सयंम व्रत न हो, समाधि अनुभव में सेक्स उर्जा का रूपान्तरण न हो उस स्थिति में उस संन्यास दीक्षा का क्या परिणाम होगा? आपको इस दिशा में भी गंभीरता से सोचना चाहिए, ऐसा मेरा परामर्श हैं।

यह वार्ता प्रसंग भी काफी लंबा चला। ओशों अपने क्रांति अभियान के पहले चरण में ही थे, इसलिए उन दिनों लंबी वाताओं के लिए अवकाश सुलभ हो जाता था। इसके थोडे समय बाद ही ओशों ने स्थायी रूप से पूना में अपना आश्रम स्थापित कर लिया। मैं भी उत्तर भारत की यात्राओं पर आ गया। इसलिए मिलन प्रसंग फिर कभी संभव नहीं हो पाया। किंतु ये सभी मिलन–प्रसंग जीवन के अविस्मरणीय अंश अवश्य बन गए हैं।





# ढाई हजार वर्ष पुरानी बातों को लेकर खींचा तान ?

**○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुला श्री**

**साध्वी श्री जी–** भगवान महावीर को हुए ढाई हजार वर्ष हो गए। आज जैन समाज में उस समय की बातों को लेकर बड़ी भारी खींचा तान है। दिगम्बर समाज कहता है साधु को वस्त्र पात्र रखना ही नहीं है। श्वेताम्बर मुनि श्वेताम्बर शास्त्रों की साक्षी देकर कहते हैं 'वत्थं पायं व संजए' वस्त्र पात्र की प्रतिलेखन करके संभाल कर रखे। भगवान महावीर ने दीक्षा लेते समय वस्त्र भी धारण किया था। पहले

शुरू शुरू में गृहस्थ के पात्र में भी आहार करते थे। फिर किसी कारण से कर पात्री बन गए।

दिगम्बर तथा श्वेताम्बर मुनि मुख वस्त्रिका धारण नहीं करते। स्थानक वासी तथा तेरापंथी मुख वस्त्रिका लगाते हैं। कुछ संत लुंचन नहीं करते। कुछ करते हैं। और कुछ कहते हैं कि मुनि को लंबे बाल नहीं रखने चाहिए। लुंचन करे चाहे मुंडन करें क्योंकि शास्त्रों में पाठ आता है 'लुंचिए वा मुंडिए वा'। जो लुंचन या मुंडन नहीं करते हैं तो सम्वत्सरी के समय गो रोम से बड़े वाल रखने वाले मुनि को प्रायश्चित बताया है। हम अक्सर सम्वत्सरी के दिन साधु साध्वियों से सब बातें सुनते हैं। श्वेताम्बर मंदिर पंथी चौथ की सम्वत्सरी मनाते है और स्थानक वासी तथा तेरापंथी पंचमी को।

दिगम्बर मुनि पर्युषण के दिनों में दस लक्षण क्षांति , मुक्ति, आर्जव, मार्दव, लाघव सत्य, संयम, तप–त्याग, ब्रह्मचर्य आदि की आराधना करते हैं। श्वेताम्बर मुनि आठ दिन पर्युषण मनाते हैं। अंतिम दिन सम्वत्सरी करते हैं। दिगम्बर मुनि कहते हैं कि वर्तमान में शास्त्र मौजूद है ही नहीं इसलिए वे प्रवचन सार और समयसार तथा षट्खंडागम को आधार मान कर चलते हैं। श्वेताम्बरों में भी मंदिर पंथी 44 आगम मानते हैं। स्थानक वासी तथा तेरापंथी 32 आगमों को प्रामाणिक मानकर उनके अनुसार चलते हैं। दिगम्बर तथा श्वेताम्बर मुनि भगवान की गैर हाजरी में मंदिरों में भगवान की मूर्ति स्थापित करके काम चलाते हैं। स्थानक वासी तथा तेरापंथी मूर्तियों की पूजा नहीं करते। और न ही मंदिर बनाते हैं। और न ही तीर्थंकर बन सकते हैं। दिगम्बर मान्यतानुसार स्त्री साध्वी नहीं बन सकती और न ही तीर्थंकर बन सकती हैं जो स्त्रियां साध्वियां बनती हैं उनको साध्वी न बोल कर माताजी बोलते हैं और उनकी मोक्ष नहीं मानी जाती। श्वेताम्बरी कहते हैं कि हमारे 19 वें तीर्थंकर मल्लिनाथ भगवान स्त्री थे और महासती चंदन बाला भी साध्वी थी और उनकी मोक्ष भी मानी जाती है। साधु की तरह साध्वियां साधुपन की हकदार क्यों नहीं ?

दिगम्बरों की दो शाखाएं हैं–20 पंथी और तेरापंथी। श्वेताम्बरों की तीन मुख्य धाराए हैं–श्वेताम्बर मंदिर पंथी, स्थानक वासी, तेरापंथी। उपशाखाओं की तो कोई गिनती ही नहीं है। महाराज अब आप ही बताइए हम किसको सही मानें किसको गल्त ? कुछ समझ में नहीं आता।

**साध्वी श्री–**राहुल की मम्मी आपको तो बहुत सारी बातों का ज्ञान है। लगता है खूब शास्त्र पढ़ रखे हैं। देखिए जैन धर्म को मानने वाले हैं उनमें मूल भूत कोई फर्क नहीं है। वे ही भगवान महावीर सबके आराध्य हैं। वही नवकार मंत्र है। वे ही 24 भगवान वर्तमान चौबीसी में मान्य हैं और वहीं धर्म का नाम जैन धर्म है। पहले निर्ग्रन्थ धर्म इसका नाम था अब इनमें जो परंपरा भेद आया है उसका कारण है, हजारों वर्षों में हर एक चीज में फर्क आ ही जाता है। उस समय के और आज के समाज में रहन–सहन में , पहनावे में, खान–पान में भी तो कितना फर्क आ गया। जिस को जो अच्छा लगा उसने उसी को अपना लिया। जब तक वीतरागी थे तब तक तो सही गल्त का निर्णय देने वाले थे फिर जब कोई वीतरागी नहीं रहे। तो सबने अपनी मन जंची धारणाएं बना ली।

साधु लोगों में अलगाव हो जाता है तो श्रावक लोग भी अपने श्रद्धेय साधुओं का अनुगमन करने लग जाते हैं। यद्यपि इस अलगाव का नतीजा अच्छा नहीं आया है। सब समाजों पर गल्त असर पड़ा है। जैन धर्म के टुकड़े किन्हीं और कारणों से भी हुए होंगे लेकिन फिर सब सिद्धांत भेद की बातें करने लग जाते हैं। लोग सोचते हैं जब इनमें आपस में ही इतनी फूट है तो फिर क्या इस धर्म का अनुसरण करना है। यही कारण कि जैन धर्म फैल नहीं सका जबकि बौद्ध धर्म जैन धर्म का समकालीन है परन्तु आज देश विदेशों में कितना फैला हुआ है ? और भी दुनियां के धर्म वैदिक, ईसाई, इस्लाम, फारसी सब जगह कितने फैले हैं और फैलते ही जा रहे हैं। जैन ध र्म को सब सर्वोत्तम मानते हैं लेकिन आपसी फूट ने बेड़ा गर्क कर दिया। भगवान महावीर की 25वीं शताब्दी पर सभी समाजों ने मिलकर चेष्टा की थी कि हम सब एक हो जाएं। मूलभूत बातों में एक हो जाए। उपर के परंपरा भेद चाहे चलते रहें। श्रावक समाजों के चाहने से क्या हो?साधु समाज जब तक अपना अहंकार न छोड़े। कहावत है 'घर की फूट लंका ढहाए' घर की फूट से क्या–क्या अनर्थ हो जाते हैं। लंका जैसे सम्पन्न, समृद्ध और विशाल सम्राज्य का घर की फूट के कारण पतन और विनाश हो गया। राजा रावण जैसे बलशाली सम्राट की देखते ही देखते मौत हो गई। जो अपने आपको अमर मानता था। यह सब किस वजह से हुआ ? घर की फूट के कारण। जैन धर्म का पतन भी आपसी फूट के कारण ही हुआ है।



पुरानी पीढ़ियां तो फिर भी अपने पूर्वजों की परंपरा को निभा रही हैं लेकिन आज की नई पीढ़ी है उसमें धर्म के प्रति सर्वथा अनास्था और अरूचि हो गई है। इससे हमारे धर्म का कितना नुक्शान हुआ है? कहने को हम कह देते हैं कि हमारे धर्म की मूलभूत बातें एक हैं वे सभी सम्प्रदायों में एक जैसी हैं लेकिन मूलभूत को कौन देखता है ? दीखता जो फर्क है उसका असर पड़ता है। इस साम्प्रदायिक कट्टरता ने धर्म की बजाय अपने अपने संघों को मजबूत –करने की भावना को जागृत किया है। राहुल की मम्मी अगर आप को सही माने में धर्म की आराधना करनी है तो समता धर्म का अभ्यास करना चाहिए। भगवान् महावीर ने समता को ही सब से बड़ा धर्म बताया है। 'समयाधम्ममुदाहरे मुणी। बाकी चाहे कहीं आओ कोई फर्क नहीं पड़ता मन में यह विचार ही मत करो कि हम दिगम्बर हैं। श्वेताम्बर मुनियों के पास कैसे जाएं या हम श्वेताम्बरी हैं दिंगबर मंदिर में जाना हमारे लिए वर्जित है। मन में यही धारणा रखो कि हम जैन हैं। जैसे विदेश में सभी जैन एक मंच पर बैठकर धर्म की आराधना करते हैं। समता धर्म की आराधना ही महावीर–जयंती की सार्थकता है।

## *गीतिका*

**○ साध्वी मंजु श्री**

*प्रभो तुम्हारी करूणा से यह चेतन जाए जग*
*सपनों की दुनियां से तोड़ों, मेरा जो अनुराग*

*वृग पर छाई घोर निराशा है, दीख न पाती सही दिशा हैं*
*घना अंधेरा दम घुटता है, जलाओ तूफान चिराग।*

*जब-जब ध्यान लगाऊं प्रभु में टिक नहीं पाता मन चंचल*
*कैसे रोकूं राह सुझाओ जाता कहीं मन यह भाग।*

*अन्तरयामी अब न छुपाओ प्रकट करो अपनी तस्वीर*
*पर आकर्षण छूटे सुलझे, जलमन भरा दिमाग।*

*निष्काम भाव से करूं साधना, ऐसा भगवन् बल भर दो*
*मंजू शांत रहे सुख दुख में मन में रहे वैराग्य।*

## विश्वास

दूर है मंजिल
बरसती आग है
लू है-
छिटकती आ रही आकाश से
बेदर्द नंगे सूर्य की किरणें
पगों में जल रही हैं राह

जितनी दूर तक भी
दृष्टि जाती है
दिखाई दे रहे हैं
ऊंचे चमकते रेत के टीले।

मगर यह आदमी है
हार कर अब तक नहीं बैठा
पसीने पर बहुत विश्वास है इसको।

अरे श्रम बिन्दु ही इतने लुटा देगा
पसीना ही बने जो वाष्प
बनकर मेघ
सारा व्योम ढक लेगा।

गिरेगी घार नभ से
और बौराई घटा तब
तृप्त पुलकित हो
हरित मखमल बिछा मग में
स्वयं ही आरती इसकी उतारेगी

भले ही दूर है मंजिल
बरसती आग है
आदमी विचलित नहीं होगा
उसे विश्वास है, अपने पसीने पर।

डा.मदन मोहन चोपड़ा
(94 वर्ष की उम्र में लिखित कविता)



## गीत

कोई धर्म नहीं सिखलाता, जीवन में बैर विरोध पले।
नासमझी में क्रोध उपजता,
बोध जगे जगती है समता
समता से समभाव जागते औ सभ विषमता छूट चले।
कोई धर्म नहीं सिखलाता, जीवन में बैर-विरोध पले।।

श्रम से नित उपयोग जागता
औ प्रमाद भी त्वरत भागता
जिये सदा स्वाधीन भाव से, ऐसी चर्या स्वयमेव ढले
कोई धर्म सिखलाता, जीवन में बैर-विरोध पले।।

सम्यक् दर्शन को पहिचानें
जाने बिना नहीं मन मानें
स्व-पर भेद को समझ लीजिये, अन्यथा नित मन मचले।
कोई धर्म नहीं सिखलाता, जीवन में बैर-विरोध पले।।

क्षमा धर्म को नित्य पालिए
जीवन से सब रोष जालिये
शांतभाव से स्वंय साधियें पर -आकर्षन से नित बचलें।
कोई धर्म नहीं सिखलाता, जीवन में बैद विरोध पले।।

नित प्रति पूजें वीतरागता,
अन्तर्मन स्वयमेव जागता
अपना जीवन जियें स्वंय सब, नित अपना संशोधन कर लें।
कोई धर्म नहीं सिखलाता, जीवन में बैद विरोध पले।।

○ **विद्यावारिधि डॉ. महेन्द्र सागर प्रचंडिया**
'मंगल कलश'

# प्राकृतिक चिकित्सा एवं दृष्टिदोष

○ डा. बिंद किशोर गुप्ता

शरीर की दस इंद्रियों में पांच ज्ञान इन्द्रियां है। इनमें आंख भी एक ज्ञान इन्द्री है एवं इसका महत्वपूर्ण कार्य है। आंख एक प्रकार का कैमरा है। दूर से आने वाली प्रकाश किरणें वस्तु से टकराकर आख के पर्दे पर पड़ती हैं जिससे वस्तु दिखाई देती है। यदि वे किरण पर्दे से कुछ पहले ही केन्द्रित हो जाती हैं, तो उस व्यक्ति को दूर की चीजें साफ दिखाई नहीं देती। इस दोष से मुक्ति के लिए चिकित्सक दूर का चश्मा पहनने की सलाह देते है। पढ़ने–लिखने में कठिनाई होने पर या निकट की छोटी–छोटी वस्तुएं नहीं दिखाई देने पर भी चश्मा लगाया जाता है। आज का दैनिक जीवन इतना व्यस्त व भागदौड भरा हो गया है, इसी के फलस्वरूप लोगों की आंखों पर गलत प्रभाव पड़ रहा है तथा बच्चों में भी माता पिता का प्रभाव पड़ता है जिससे आज छोटे छोटे बच्चो की नजरें कमजोर होने लगी हैं और उनको चश्मा भी लगने लगा है। यह सब शरीर के प्रति लापरवाही का एक परिणाम है।

**कारण :**

कुपोषण, विटामिन 'ए' की कमी, खानपान में समयबद्धता न होना, अनियमित दिनचर्या, ज्यादा तली–भूनी व चाय–काफी जैसे उत्तेजक व नशीले पदार्थों का सेवन, कम रोशनी या तेज रोशनी में काम करना, गर्मी के मौसम में सड़क पर नंगे पैर या धूप में चलना, लगतार पढ़ना, लेटकर पढ़ना, कम्प्युटर पर लगातार कार्य करना बहुत जोर लगाकर देखना, शौकिया चश्में पहनना, नेत्र साफ न करना, व्यायाम का अभाव, ब्रह्मचर्य का पालन न करना, प्रदूषित वातावरण में अधिक देर तक रहना तथा कब्ज रहना, हस्त मैथुन करना, सिर में लगातार दर्द, आंखों में गलत दवा डालने तथा मधुमेह आदि कारणों से नेत्रों की ज्योति कम हो जाती है, जिसके कारण चश्मा पहनना पड़ता है।

**नेत्र ज्योति बढ़ाने के उपाय–**

प्राकृतिक एवं यौगिक चिकित्सा द्वारा आंखों की रोशनी को बढ़ाने के लिए कुछ प्रमुख उपाय यहां दिए जा रहे हैं। जिनके नियमित अभ्यास के द्वारा एवं भोजन में आवश्यक सुधार कर नेत्र की ज्योति बढायी जा सकती है, जिससे धीरे धीरे चश्में का नंबर कम होता जाता है और एक दिन चश्मा भी उतर जाता है।



**यौगिक उपचार :**

**1. आंख धोना :–**प्रातः एवं सायंकाल ठंडे जल से छीटें मारकर आंख को धोना या आंखों को धोने वाली प्यालियों में ठंडा जल भर कर कुछ देर आंख पर लगातार रखना लाभदायक है। आयुर्वेद में भावप्रकाशकार ने मुख में पानी भरकर ठंडे पानी के छीटे मारकर नेत्र धोने का निर्देश दिया है।

**2. प्रातःकाल घास पर नंगे पैर चलना :–**सुबह मुलायम घास पर तेज चाल से टहलना, हरी घास एवं पेड पौधे की हरी पत्तियों को देखना आंखों के लिए विशेष लाभ करता है।

**3.आंखों पर मालिश करना :–**दोनों हथेलियों को तेजी के साथ आपस में रगड़ें, गर्म होने पर आंखों की पलकों के ऊपर रखकर हल्की मालिश करें। इसके बाद पुनः इसी क्रम से मस्तक में फिर दोनों आखों एवं कान के बीच वाली जगह पर मालिश करें तथा रात्रि में सोते समय पैर के तलवों पर सरसों के तेल की मालिश लाभ करती है।

आचार्यबाणभट्ट ने दिनचर्या में नियमित रूप से शरीर में तैलाभ्यंग मालिश को सम्मिलित करने का निर्देश दिया है।

**4.पामिंग :–**इसको करने के लिए दो–तीन मिनट के लिए बाएं हाथ की हथेली का कप बनाकर दाई बाई आंख पर तथा दाएं हाथ की हथेली का कप बनाकर आंख पर रखें। दाएं हाथ ही अंगुलियां बाएं हाथ की अंगुलियों के उपर हों। आंख को शिथिल एवं बंद कर पूर्ण विश्राम दें, ऐसा करने से आंखों को शीतलता प्राप्त होती है।

**5.कुंजल क्रिया :–**सप्ताह में एक बार कुंजल क्रिया का अभ्यास करना आंखों की ज्योति को बढ़ाने में विशेष रूप से लाभदायक है। एक लीटर गुनगुने जल में एक चम्मच नमक मिला कर पानी को पी लें फिर खड़े होकर कमर से थोड़ा झुके दाहिने हाथ की तीन अंगुलियां मुख के अंदर डालकर चलाए, इससे मुख से उल्टी होकर पानी निकल जाएगा। जब तक पूरा पानी न निकल जाए तब तक अंगुलियों को मुंह के अंदर डाल कर उपरोक्त क्रम को दोहराते रहें। कुंजल करने के पश्चात् चेहरे को न धोएं।

**6.सूत्र, जल व दुग्ध नेति क्रिया :–** आंखों की नेत्र ज्योति को बढ़ाने के लिए सूत्र व जल नेति करना तथा नाक के द्वारा दुग्ध पान करने से आखों को विशेष लाभ होता है। नेत्र उतमांग का प्रमुख अंग है इनके शोधन के लिए आयुर्वेद में नस्य का नियमित प्रयोग करने का उल्लेख मिलता है।

**7. यौगिक सूक्ष्म व्यायाम :–** नेत्र शक्ति विकासक की सभी क्रियाओं का अभ्यास करना विशेष लाभ प्रदान करता है किंतु इसे तथा योग आसनों को किसी योग विशेषज्ञ की देखरेख में ही करें।

**8.आसन :–**कुछ प्रमुख आसनों का अभ्यास जिनमें त्रिकोणासन, ताडासन, सूर्य नमस्कार, उत्तानपादासन, शलभासन, भुजंगासन, नौकासन, उष्ट्रासन, शवासन आदि अत्यंत लाभदायक है।

**9. प्राणायाम :–**सर्दियों में भस्त्रिका व नाड़ीशोधन प्राणायाम इसके अतिरिक्त दीर्घश्वास व कपालभाति का अभ्यास करें।

**10.त्राटक :–**इसका अभ्यास शांत जगह पर किसी तस्वीर शुद्ध देशी घी का दीपक जलाकर उसकी लौ को आंखों से बिना पलक झपकाएं एकटक देखते रहें। ऐसा करने से शुरूआत में आंखों से आंसू निकलेंगे आंखों में लाली, जलन व अन्य उपद्रव शांत होकर आंखों की रोशनी तीव्र होती है। यह आंखों के लिए बहुत ही लाभदायक क्रिया है।

**11. आंखे झपकना :–**पढ़ते–लिखते, टी.वी. देखते व अन्य काम करते समय बीच–बीच में आंखो की पलकों को झपकाते रहना चाहिए इससे आंखो को आराम मिलता है।

**12. धूप का सेवन :–**प्रातः काल दस मिनट उगते सूर्य की धूप का सेवन करें। सूर्य की तरफ देखने व तेज धूप में बाहर निकलने से बचें।

**13. आहार :–**शरीर के लिए पौष्टिक भोजन महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसलिए पूर्ण संतुलित आहार का चयन करें। यहां आंखों के लिए जो वस्तुऐं उपयोगी हैं उनमें गाजर, पालक, चौलाई, बथुआ, पत्तागोभी, फूल गोभी, नींबू का रस, आंवला, चुकंदर, शलजम, ककड़ी, आम, अमरूद, पपीता, अनानास, संतरा, गाय का दूध, टमाटर, चना, सोयाबीन, मटर, किशमिश आदि प्रमुख हैं, इनका सेवन यथासंभव नियमित रूप से करें। मिर्च –मसालों व तली चीजों का परहेज करें।

भगवान महावीर जयंती के शुभ अवसर पर एम. एस. आर नैचरोपैथी योगा एवं आयुर्वेदिक होस्पिटल की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं।

**अरूण तिवारी 'योगाचार्य'**





## 'अवसर' का महत्व

(गतांक से आगे) –

कुछ व्यक्ति भाग्य पर विश्वास करने लगते हैं कि उन्हें भाग्य कहीं भी चांस नहीं देता है। वे चाहे सोने की खान के पास से होकर निकल जाएं तो भी वह उन्हें दिखलाई नहीं पड़ती। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो बंजर में भी अवसर ढूंढ लेते हैं।

बनयन ने बेडफोर्ड जेल में अपने लए अवसर देख लिया और संसार के महान् रूपक काव्य की रचना कर डाली। आप पूछेंगे कि जेल में कागज कहां मिला? सुनिए उसे जो दूध दिया जाता था, उसे ढंकने के लिए गिलास के ऊपर कागज रखकर मोड़ा जाता था। उसी कागज पर बनयन अपनी काव्य रचना किया करता था और तो छोडिए– एक बालक ने जंगल में लकड़ी काटने में ही अपना अवसर देखा, स्कूल की तो बात ही क्या, उसके पास किताबें जुटाने का भी साधन न था। किताबें मांगने के लिए उसे मीलों दूर पैदल जाना पड़ता था। स्वंय अध्ययन करते–करते वह वकील बना और यही नहीं, एक दिन वह अमेरिका का राष्ट्रपति भी बन गया। उस व्यक्ति का नाम था, अब्राहम लिंकन। कैसा चमत्कार है। वह जिस प्रकार महान बन गया, आप भी महान बन सकते हैं। आवश्यकता है कि आप भाग्यवादी न बनें, तत्काल कार्य प्रारंभ कर दें। अवसर की प्रतीक्षा न करें, वरन् अवसर स्वंय बनाएं।

जब आप कहते हैं–''मेरे लिए कोई अवसर नहीं है, कार्य नहीं कर सकता हूं–'' तब आप भी एक तरह से सहस्त्रों युवक–युवतियों की तोता रटन्त को दोहराते हैं जो कहते हैं–''यह असंभव है। मैं इस काम को करने में असमर्थ हूं।'' कृपया इन सभी शब्दों को अपने शब्दकोश में से निकाल फेंकिए। जब आप महान् कार्यों की बात सोच रहे हैं और सोच रहे हैं कि काश आपको कॉलेज की शिक्षा मिल सकती, व्यापार शुरू करने के लिए आपके पास पूंजी होती, तब आप उनके उदाहरण अपने सामने क्यों नहीं रखते जिनके पास आपसे भी कम अवसर थे और फिर भी उन्होंने पथ की बाधाओं को ठोकर मारकर अपना रास्ता बनाया और निरंतर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होते चले गए। उनके पास न मित्र थे, न धन, न प्रभाव, न कोई सहायक, इसके बावजूद आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता का सहारा लेकर बाधाओं को उठाकर दूर फेंक दिया। शारीरिक दुर्बलता या अपंगता की परवाह न की। भाग्य के भरोसे बैठना कभी ठीक नहीं समझा, हर प्रकार के बाधक वातावरण में भी वह अपने व्यक्तित्व का सर्वोत्तम विकास करने में सफल हो गए। किसी ने

सच कहा है कि ईश्वर जब किसी मनुष्य को शिक्षा देना चाहता है तो वह उसे सम्पति के विद्यालय में न भेजकर विपत्ति के विद्यालय में भेजता है उसे आवश्यकताओं और अभावों के विद्यालय में भेजता है। कई बार गरीबी के कारण मनुष्य के छिपे हुए गुण प्रकाश में आते हैं, जिनकी कभी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। असाधारण अवसर नहीं, सुख आराम नहीं, सुविधा और प्रोत्साहन नहीं, पूंजी और ऐश्वर्य नहीं , निर्धनता ही मानव जाति का महान् विश्वविद्यालय रहा है। इस विद्यालय से निकले स्नातकों की बहुसंख्या ही महान् राजनीतिज्ञों, उदारचितों, परोपकारियों, विद्वानों, साहित्यकारों संगीतज्ञों तथा चित्रकारों का पद शुभोभित कर रही है। जिन्होंने महान् कार्य कर दिखलाए, वह भाग्यशाली घरों में पैदा नहीं हुए थे, निर्धन घरों में हुए थे, जिनके पास कोई अवसर न था। फुल्टन, माइकेल, फाराडे, हिटमे, हावे, एडवर्ड बैल आदि इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

मनुष्य के वास्तविक इतिहास में इससे अधिक रोमाचंक कथा दूसरी नहीं है कि कठिनाइयों में किस प्रकार मनुष्य ने अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त की हैं। कैसे बाधाओं को लांघकर महान् कार्य कर दिखला दिए। बड़े–छोटे स्तर पर उन्हानें काम शुरू किया। प्रगति करते–करते उन्नति के शिखर पर जा पहुंचे। उनका आरंभ कितना लघु था और विजय कितनी महान्। उनका धैर्य, उनके अभाव, कष्ट–बाधाएं, जिन्हें उन्होंने पार किया, अन्त में उनकी विजय किस प्रकार हुई–इसका इतिहास ही सबसे मनोरंजक और यह बड़ी लोमहर्षक कथा हैं वस्तुतः उन्होंने साधारण अवसर को हाथ में लिया और निरन्तर कठिन संघर्ष करते–करते महान् बन गए। साधारण योग्यता से उन्होने अपनी शुरूआत की और निरन्तर अपनी योग्यता बढ़ाते चले गए। अपने उद्देश्य के लिए पूर्ण सामर्थ्य प्राप्त करने में सफल हुए। उनकी सफलता का वर्णन केवल शब्दों में नहीं किया जा सकता है।

निश्चित उद्देश्य। अटल इच्छा शक्ति। कितना सुंदर दृश्य है कि एक व्यक्ति ने उन परिथितियों से संघर्ष किया जो उसे नीचे गिराने पर तुली हुई थीं। वह अटल, अकम्पित अपने श्रमशील मार्ग पर डटा रहा। उसका हृदय श्रमशील रहा। वह सभी कठिनाइयों का सामना करने के लिए कटिबद्ध रहा। उसने संघर्ष करते–करते अपनी आंतरिक शक्तियों तथा कार्यक्षमता का विकास कर लिया था। उसने पौरूष का प्रदर्शन किया, पुरूषार्थ किया, अपने चरित्र बल से दिखला दिया कि वह परिस्थिती का स्वामी है, उनका गुलामी नहीं। ऐसे पुरूष की गति को रोकने की शक्ति किसी में नहीं है। जिसका उद्देश्य शक्तिशाली है, मन प्रबल है, कठिनता अपराजित है, हाथों में शक्ति है, उसकी राह भला कौन रोक सकता है।



इस प्रकार के सहस्त्रों युवक प्रतिवर्ष उन बंधनों की कड़ियां तोड़कर आगे बढ़ते हैं, जो उन्हे घेर लिया करती हैं, पर दुर्बल हृदय व्यक्ति, लापरवाह, आलसी लोग, बहाने बनाने वाले अकर्मण्य लोग हमेशा अपनी किस्मत का ही रोना रोते रहते हैं। जैसे विचार जीवन पर शासन करते हैं, वही भाव मन पर सर्वोपरि होते हैं। सामान्यतः व्यक्ति की सिद्धि भी उन्हीं के अनुरूप हुआ करती है।

धीमी दृढ़ इच्छाशक्ति में बड़ा अंतर होता है। जब तक लोहा गर्म होकर लाल न हो जाए, तब तक उसे पीटकर इच्छानुकूल रूप नहीं दिया जा सकता है। ठीक उसी प्रकार जब तक इच्छाशक्ति प्रबल न हो जाए, जब तक मनुष्य का खून नहीं खौलता, तक तक वह सफलता के लिए जी–तोड़ प्रयत्न नहीं करता है। जब तक पूरी भाप न मिलें, इंजन का पिस्टन तो काम नहीं करता है। भाव से इंजन का पहिया नहीं चलाया जा सकता। जो इच्छाएं सफल नहीं होती, वे दुर्बल इच्छाएं, अधूरी कामनाएं होती हैं। जब तक प्रबल इच्छा मन में खौलने न लगे जब तब रक्त में उबाल न आ जाए, जब तक मन में खलबली न मच जाए, जब तक तन–बदन में लक्ष्यसिद्धि की कामना प्रदीप्त न हो जाए, जब तक व्यक्ति की प्रवृत्ति और शक्तिक्षमता और कार्यकुशलता एक ही बिंदु पर केन्द्रित नहीं होती है, तब तक उसे सफलता भी नहीं मिलती है।

एक युवक की बात है। कुछ समय पहले वह नवयुवक जो कई वर्षों से अपंग हो चुका था, वैसाखियों के सहारे हमारे पास आया। उसने बताया कि वह न केवल स्वंय कॉलेज में बड़े परिश्रम से अध्ययन कर रहा था, बल्कि अन्य निर्धन विद्यार्थियों की सहायता भी कर रहा था। वह केवल ईमानदार परोपकारी है। और निश्चित है कि वह संसार में अवश्य ही एक दिन कुछ बनकर दिखलाएगा। उसके अंदर महान् उद्देश्य है, जिसका उसे ज्ञान है , उसकी पूर्ति के लिए विवश करने वाली कोई इच्छा अवश्य शारीरिक बाधाओं के रहते हुए भी उसे लक्ष्य पथ पर चलने के लिए लगातार प्रेरित करती रहती है।

कोई भी बाधा जिसे आप उपने उद्देश्य से महान समझते हैं, कोई भी बचपन जिसे आप दृढ़ निश्चय से अधिक दृढ़ मानते हैं–आपको सफलता से दूर ही बनाए रखेगा। जो बातें नीचे गिराए हुए हैं, क्या वह बली हैं या ऊंचा उठने की इच्छा प्रबल है– इसी पर कल का भविष्य निर्भर करता है। आप महान् है या बाधा ? पहले इसका फैसला कर लें। जब तक आपको बाधाएं महान प्रतीत होती हैं, तब तक आप महान् नहीं हो सकते हैं।

○ **स्वेट मार्डन**

# मासिक राशि भविष्यफल—:अप्रैल 2006

○ डा. एन.पी. मित्तल, पलवल

**मेष—**मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार—व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर लाभ दायक ही रहेगा। नई योजनाएं बनेंगी। बेकार के वाद—विवाद से परहेज करें। पिछले रूके हुए धन को निकालने की कोशिश सार्थक होगी। पराक्रम में वृद्धि होगी। समाज में यशमान इज्जत बनी रहेगी। जो लोग राजनीति में हैं, उनके लिये भी समय अच्छा है। परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। दाम्पत्य जीवन सामान्यतः सुखी रहेगा।

**वृष—**वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्ध में अच्छा तथा उत्तरार्ध में मिश्रितफल दायक है। सरकारी क्षेत्र में कार्य करने वालों के लिये यह माह शुभफल दायक है। वृष राशि के जातकों की छोटी बड़ी यात्राएं होंगी जो सफल होंगी किंतु यात्रा में परेशानी या कष्ट संभावित है। शत्रु सिर उठाएगे किंतु मित्रों की मदद से आप उन पर काबू पा लेंगे। परिवार में सामन्जस्य रखना आसान नहीं होगा, बुजुर्गों की सलाह लें। समाज में यश, मान, इज्जत सामान्यतःबनी रहेगी। दाम्पत्य जीवन में कुछ खटास का अनुभव करेंगे पर अन्ततः संबंध मधुर बनाने में कामयाब रहेंगे।

**मिथुन—**मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार—व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभालाभ की स्थिति लिये होगा। परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। कुछ लोगों को कार्य में बदलाव करने से लाभ होगा। बेकार के वाद—विवाद से परहेज करें। नौकरी पेशा जातकों को अच्छे लाभ की आशा करनी चाहिये। लालच में फंसने से नुकसान हो सकता है। परिवार जनों में सामन्जस्य बनाने में मुश्किल होगी। मानसिक चिन्ता बनी रहेगी। शत्रुओं से सावधान रहने का समय है। छोटी बड़ी यात्राएं होंगी जिनमें दुर्घटना का खतरा रहेगा।वाहन सावधानी से चलाएं। स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें।

**कर्क—**कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार—व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुछ अवरोधों के चलते अच्छा फल देने वाला है। अनजान व्यक्तियों पर बिना सोचे समझे विश्वास करने से नुकसान हो सकता है। शत्रुओं से भी बचकर रहना होगा। ये जातक आत्मविश्वास बनाए रखेंगे तो सभी अड़चनों को पार कर लेंगे। किन्हीं जातकों का रूका हुआ धन भी इस माह मिल सकता है। कुछ जातकों के



वाद—विवाद उनके हक में हल हो जाएंगे। समाज में मान, प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

**सिंह—**सिंह राशि के जातकों के लिये व्यापार—व्यवसाय की दृष्टि से इस माह के मध्य भाग कुछ अशुभ फल इंगित करता है जब कि आदि और अंत अच्छा है शुभ समय से अच्छे लाभ की आशा की जानी चाहिये। शत्रु सिर उठाएंगे किंतु आप उन पर काबू पा लेंगे। किंतु शत्रुओं के कारण मानसिक चिंता बनी रहेगी। आपके मित्र आपके काम आयेंगे। कोई धार्मिक अनुष्ठान हो सकता है। छोटी बड़ी यात्राएं संभावित हैं जो सफल होंगी। सेहत का ध्यान रखें। दाम्पत्य जीवन में सामन्जस्य बनाए रखें।

**कन्या—**कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार—व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आरंभ में कुछ डांवाडोल स्थिति देने वाला है, फिर धीरे धीरे आपके शुभचिंतकों की सलाह एवं सहयोग आपके काम आएगा। तथा कारोबार एवं व्यापार में बढ़ोतरी होगी। कोई भूमि भवन की समस्या भी हल हो सकती है। अपने मन की एकाग्रता भंग न होने दे। शत्रु सिर उठाएंगे पर वो अपने मनसूबों में कामयाब नहीं होगे। परिवार में भी तालमेल बिठाने में आपको परिश्रम करना पड़ेगा। स्वास्थ्य का आपको इस माह विशेष ध्यान रखना चाहिए।

**तुला—**तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार—व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अधिकांशतः शुभफलदायक ही है। कुछ जातकों को अचानक लाभ मिलने की स्थिति भी आ सकती है। ये जातक सामाजिक कार्यों में रूचि लेंगे तथा परोपकार के कार्य को आगे बढायेंगे। समाज में इन जातकों की यश मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी। किसी शुभ समाचार की प्राप्ति भी हो सकती है। किसी धार्मिक मद में पैसा भी खर्ज हो सकता है पर मानसिक संतोष बना रहेगा। छोटी बड़ी यात्राएं भी होगी जो सफल होंगी। कोई गलतफहमी होने पर सर्वशक्तिमान को याद करें। सेहत के प्रति सचेत रहें।

**वृश्चिक—**वृश्चिक राशि के जातकों के लिये व्यापार—व्यवसाय की दृष्टि से यह माह विशेष फल दाई नहीं है। व्यापार—व्यवसाय में कई अवरोध आ सकते हैं, यहां तक कि ऐसा लगेगा कि पैसा अब आया, अब आया, किंतु हाथ में आते आते कोई न कोई ऐसी स्थिति बन जाएगी कि पैसा रूक जाएगा। मित्र भी शत्रु जैसा कार्य कर सकते हैं। बाद में गलतफहमी दूर होने पर लाभ होगा। ऐसे मौकों की वजह से स्वास्थ्य भी प्रतिकूल रूप से प्रभावित होगा। हां कोई भूमि भवन की समस्या का हल हो सकता है। जिससे मानसिक चिंता में कमी आयेगी। परिवार में कोई

झंझट हो सकता हैं किंतु दाम्पत्य जीवन सामान्य रहेगा।

**धनु–**धनु राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से नई योजनाओं के क्रियान्वयन का रहेगा। निर्णय लेने से पहले अच्छी प्रकार सोचें। इस माह आमदनी से अधिक खर्च की बहुतायत रहेगी। ऐसी स्थिति में नाहक किसी पर क्रोध न करें। जिससे दूसरे को हानि हो। काम की व्यस्तता के कारण आप परिवार की ओर भी पूरा ध्यान नहीं दे पायेंगे। परिवार के सदस्यों में सामन्जस्य बनाना एक मुश्किल काम होगा। दाम्पत्य जीवन में नोक झोंक के चलते यह माह व्यतीत होगा। दुर्घटना एवं अपनी सेहत के बारे में सचेत रहें।

**मकर–**मकर राशि के जातकों के लिये व्यापार–व्यवसाय की दृष्टि से यह माह परिश्रम साध्य मिश्रित फल वाला रहेगा। मेहनत बहुत करनी पड़ेगी जबकि लाभ आंशिक ही होगा। इस माह खर्चा अधिक होने की संभावना है। शत्रुओं से बचाव हेतु भी खर्चा करना पड़ सकता है। मानसिक चिंता बनी रहेगी। विद्यार्थियों के लिये समय अच्छा है। वे अपनी मेहनत में सफल होंगे। इस माह के मध्य में विशेष रूप से स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। समाज में मान बना रहेगा। दाम्पत्य जीवन सामान्य तथा सुचारू रूप से चलेगा।

**कुंभ–**कुंभ राशि के जातकों के लिये व्यापार–व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के फल देगा फिर जब लाभालाभ का विचार किया जाएगा तो लाभ ही अधिक होने की उम्मीद हैं। कार्य की सम्पूर्णता में अवरोध आयेंगे तथा शत्रु नुकसान पहुंचाने में कोई कसर नहीं छोडेंगे पर अन्ततः आप सफल होंगे। समाज में यश, मान, प्रतिष्ठा बनी रहेगी। परिवार जनों में थोड़े परिश्रम से सामन्जस्य बना रहेगा। स्वास्थ्य का ख्याल रखें।

**मीन–**मीन राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से इस माह आरंभ शुभ तथा बाकी समय उतार चढ़ाव भरा है। कोई भी कार्य बिना रोड़ा अटके सिद्ध नहीं होगा। सरकारी कर्मचारियों को कुछ सफलता मिलेगी। छोटी बड़ी यात्राएं होगी किंतु दुर्घटना से सावधान रहें। साझेदारी के कार्य में परेशानी आ सकती है। मानसिक शांति बनाए रखें। अपने लक्ष्य से अपना ध्यान न हटने दें। दाम्पत्य जीवन में आपसी विश्वास में कभी ना आने दें। समाज में मान बना रहेगा।

**।। मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है।।**
**''भगवान महावीर''**



## गीत

## जीवन की सार्थकता और सच्चाई पर आधारित भजन।

*जीवन खत्म हुआ तो जीने का ढंग आया*
*जब बुझ गई शमा तो महफिल पे रंग आया।*

*मन की मशीनरी ने जब ठीक चलना सीखा*
*तब बूढ़े तन के हर एक पुर्जे पे जंग आया।*

*गाड़ी निकल गई तो घर से चला मुसाफिर*
*मायूस हाथ मलता वापस वेरंग आया।*

*फुर्सत के वक्त में ना सुमिरण का वक्त निकला*
*उस वक्त वक्त मांगा जब वक्त तंग आया।*

*आयु ने सज्जनों जब हथियार फैंक डाले*
*यमराज फौज लेकर करने को जंग आया।*

○ **साध्वी मंजुला श्री**

*प्रज्ञा पुरूष आचार्य श्री रूपचन्द्र जी महाराज*
*की तरफ से समस्त विश्व को*
*महावीर जयंती की*
*हार्दिक शुभकामनाएं।*

परम पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री रूपचंद जी महाराज पूज्या संघ प्रवर्तिनी साध्वी श्री मंजुला श्री जी महाराज अपने धर्म परिवार के साथ मानव मंदिर केन्द्र दिल्ली में विराजमान है। धर्म की प्रभावना उत्तरोतर विकासोन्मुख है। मानव मंदिर केन्द्र द्वारा संचालित सभी सेवा कार्य प्रगति पर है। महानगर दिल्ली तथा देश विदेशों से भक्तजनों का आवागमन बराबर लगा रहता है। पूज्य गुरूदेव तथा पूज्या साध्वी श्री से धर्म की प्रेरणा पाकर आगन्तुक अपने को धन्य समझता है।

## पूज्य गुरूदेव की हिसार यात्रा

हिसार शहर में स्थित मानव सेवा मंदिर में परम पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री रूपचन्द्र जी महाराज का लंबे समय के बाद पधारना हुआ। मानव सेवा के पदाधिकारी श्री केशोराम जी, श्री दीपचंद जी, देवाराज जी एडवोकेट, श्री ओम प्रकाश जी, श्री राम भगत जी, श्री पतराम जी आदि सभी शहरवासीयों ने पूज्य वर का स्वागत किया। पूज्या साध्वी श्री मंजु श्री जी महाराज अपनी सहयोगी साध्वियों के साथ वहां पहले से ही विराजमान थी। उनके अथक प्रयास से गुरूदेव श्री के कम समय का भी लोगों ने ज्या लाभ उठाया। सेवा भावी श्री राम भगत जी सातरोड़िया यद्यपि अभी अस्वस्थ चल रहे है। उम्र भी बहुत हो गई है । फिर भी मानव सेवा मंदिर की हर गतिविधि की जानकारी रखते है। मानव सेवा मंदिर में वर्षों से होम्योपैथिक औषधालय तथा सिलाई सेंटर चल रहा है। वहां के गुरू भक्तों ने इन सेवा कार्यों को बड़ी जिम्मेदारी से चला रहे है।

शाहपुर गौशाला में पूज्य गुरूदेव का पधारना हुआ कम समय में ही गौ भक्तों ने गौशाला में अच्छा विकास कार्य किया है। गायों के रहने खाने की बहुत अच्छी व्यवस्था है। गौशाला का कार्य भार भी मानव सेवा मंदिर के पदाधिकारी ही संभाले हुए है। आप लोगों के सुप्रयास से यह सेवा कार्य अच्छे से अच्छा चलता रहेगा।

**पंजाब समाचार–**

3 अप्रैल को पूज्य गुरूदेव हिसार शहर में विशेष कार्यक्रम में पधाार रहे हैं। हिसार से सात अप्रैल को पूज्यवर का हिसार पधारना होगा। सरलमना साध्वी मंजु श्री जी महाराज अपनी सहयोगी साध्वियों के साथ पहले से ही मानव मंदिर सुनाम में विराजमान है। यद्यपि अभी साध्वी मंजु श्री जी महाराज का स्वास्थ्य अस्वस्थ है। पूज्य गुरूदेव का महावीर जयंती का कार्यक्रम सुनाम में ही होगा।

*-परमपूज्य गुरुदेव आचार्य श्री रूपचन्द्रजी महाराज मानव सेवा मंदिर हिसार में हिसार वासियों को सम्बोधित करते हुए। साथ में विराजमान हैं साध्वी चांद कुमारी जी।*

*-पूज्य गुरुदेव के प्रभावशाली प्रवचन को ध्यानपूर्वक सुनते हुए हिसार के भक्तगण।*